Tara

बुजुर्गों के लिए...

नूतन प्रयास.... विधवा महिलाओं के बच्चें हेतु निःशुल्क शिक्षा "श्री शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल" के शुभारंभ पर दीप प्रज्जवलन करती बालिका

तारांशु

मासिक जुलाई, 2014

मूल्य - 5 रुपये वर्ष 2, अंक 12, पृ.सं. 20 संपादक :- कल्पना गोयल

- आशीर्वाद -

डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

श्री एन.पी. भार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

- आभार -

श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक,
प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

'तारा संस्थान' के मुख्य संरक्षक श्री एन.पी. भार्गव सा. के स्वर्गीय सुपुत्र श्री षिखर भार्गव की पावन स्मृति में
तारा संस्थान द्वारा प्रारंभ किया गया षिक्षा प्रकल्प –

' शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल '

शुभारंभ समारोह – 3 जुलाई, 2014

तारा संस्थान निर्धन व असहाय बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने के उद्देश्य से षिखर भार्गव पब्लिक स्कूल, सेक्टर – 9, उदयपुर में शिक्षण की व्यवस्था की गई है। ऐसे बच्चे – जिनके माता या पिता अथवा दोनों का ही निधन हो चुका है, उनके लिए शिक्षण व्यवस्था निःशुल्क रहेगी, प्रवेश शुल्क या मासिक शुल्क भी नहीं लिया जायेगा, तथा पुस्तकें व स्टेशनरी भी विद्यालय से ही निःशुल्क मिलेगी। इसके अलावा निर्धन बच्चों को शुल्क में विशेष छूट दी जायेगी। कक्षा प्री–नर्सरी से आठवीं तक शिक्षण की व्यवस्था है। प्रशिक्षित एवम् अनुभवी शिक्षकों द्वारा सभी कक्षाओं में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। कमजोर बच्चों के लिए विशेष मार्ग दर्शन एवम् घरेलू माहौल जैसे वातावरण में कम्प्यूटर शिक्षा, शैक्षिक खेल – कूद के साथ बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर पूरा ध्यान दिया जायेगा। विद्यालय में सभी कक्षाओं में प्रवेष आमन्त्रित है।

आप भी 8000/– रु. देकर एक बच्चे की वर्ष भर की शिक्षा का खर्च वहन कर सकते है, जिसमें शामिल है....
वार्षिक फीस, मासिक फीस, किताबें, कॉपी, स्टेशनरी, बेग, परिवहन व्यवस्था

अनुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ क्रमांक
शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल	–	*02*
अनुक्रमणिका	–	*03*
दादा दादी को मिले नातिन, पोते....	–	*04*
एक दानदाता का भाव भरा पत्र	–	*05*
गौरी योजना	–	*06*
तृप्ति योजना	–	*07*
आनन्द वृद्धाश्रम के नये आवासी	–	*08*
मोतियाबिन्द जाँच – ऑपरेशन हेतु चयन शिविर	–	*09-12*
अतिथि महानुभावों का सम्मान	–	*13*
सार्थक – बातचीत	–	*14-15*
दाम्पत्य जीवन के 57 वर्ष की हार्दिक – बधाई, अभिनन्दन का सौभाग्य	–	*16*
Tara Contacts	–	*17*
Our Donors	–	*18*
Donation and Dedication	–	*19*

आशीर्वाद डॉ. कैलाश 'मानव', संस्थापक – नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल अपने पूज्य पिता डॉ. कैलाश 'मानव' की सन्निधि में,

तारांशु मासिक, जुलाई, 2014

'तारांषु' – स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240–ए, हिरण मगरी, सेक्टर – 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाषित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाष कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच – III, उद्योग केन्द्र एक्टेंषन – II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेष) में मुद्रित, सम्पादक – श्रीमती कल्पना गोयल

दादा दादी को मिले नातिन, पोते....

तीन साल पहले जब तारा संस्थान ने कार्य करना प्रारंभ किया था, तो ये सोचा था कि बुजुर्गों के लिए कुछ अच्छा कर पायें, ऐसा प्रयास हो, तारा नेत्रालय प्रारंभ हुए... जिन्हें नहीं दिखता था... उन्हें दिखने लगा और वो भी बिना पैसा खर्च किये, तो हर होने वाला ऑपरेशन जश्न जैसा है हम सब के लिए.... आनन्द वृद्धाश्रम प्रारंभ हुआ... बहुत सा दर्द लेकर बुजुर्ग आते। जब वो मुझसे मिलते, तो उनके आँसुओं के साथ अकसर रोना आ जाता था, मुझे विश्वास ही नहीं होता था कि अपनी ही संतान इतनी पीड़ा दे सकती है... आनन्द वृद्धाश्रम में उन सबके चेहरे पर संतोष देख कर अच्छा लगता है... इसी तरह तृप्ति में उन लोगों की भूख मिटाना जो भूखे मरने को तैयार हैं पर अपना घर नहीं छोड़ते। चाहे उसमें बरसात का पानी गिरे या तेज ठण्ड जमा दे.... ऐसे कुछ वृद्ध लोगों को आप सबकी मदद से थोड़ा आराम भी ''तारा'' के माध्यम से मिले तो बहुत सुकून देता है.... बुजुर्गों के लिए कार्य जब प्रारंभ किया था, तब ही एक विचार अकसर आता था कि क्यों न ऐसा कुछ हो कि ये बुजुर्ग बच्चों के साथ जुड़ें... उनमें यह भी विचार आता था कि मैं स्वयं या ''तारा'' कुछ बच्चों को गोद ले लेवे ताकि हमारे आनन्द वृद्धाश्रम के बुजुर्ग जो अपने पोते – पोती, नाती नातिन की मासूमियत को Miss कर रहें हो तो हम उन्हें वो दे सके... पर पता था कि गोद लेना व्यावहारिक व कानूनी रूप से असंभव है....

मार्च के महीने में हमारे मुख्य संरक्षक श्री नगेन्द्र प्रकाश जी भार्गव व उनकी पत्नी श्रीमती पुष्पा भार्गव उदयपुर आए थे, तब गौरी योजना की कुछ महिलाओं से वे मिले और इतना द्रवित हुए कि यह घोषणा की कि इन सबके बच्चों की पढ़ाई का खर्च हम देगें। उसके बाद सारे आंकड़े जमा किए और जो खर्च आ रहा था, उसमें आदरणीय भार्गव सा. ने यह सलाह दी कि क्यों न तारा किराये का भवन लेकर बच्चों का आठवीं तक का स्कूल खोल दे, और इसमें गौरी योजना की महिलाओं या अन्य विधवा महिलाओं के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दें। विचार प्रेक्टिकल था और उसी के सिलसिले में 12 जून, 2014 को मैं और दीपेश जी भार्गव सा. से मिले। उन्होंने कुछ राशि दी और कहा कि यह विद्यालय यदि 3 जुलाई 2014 को प्रारंभ होता बहुत अच्छा है। उस दिन पुष्पा जी और भार्गव सा. के विवाह को 57 साल पूरे हो रहे थे....

समय कम था लेकिन उदयपुर आकर विज्ञापन दिया... परिणाम यह था कि तारा संस्थान ने एक विद्यालय ''श्री शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल''

जिसमें विधवा महिलाओं के बच्चों को पूर्णतया निःशुल्क शिक्षा, किताबें, बैग मिलेगा।

मेरे पापा आदरणीय कैलाश जी मानव हमेशा कहते हैं कि आप कुछ भी सोचो और ब्रह्मांड से मांगों आपकी हर सोच ब्रह्मांड क्रियांन्वित करेगा.

मेरी कल्पनाओं में हमेशा यह तीव्र विचार था कि हमारे आनन्द वृद्धाश्रम के बुजुर्गों को बच्चों का साथ मिले और ईश्वर ने इस विचार को इतनी जल्दी अंजाम तक पहुँचा दिया.... आप बस आँखों बंद कर सोचिये कि अपना घर छोड़कर आए बुजुर्ग छोटे बच्चों के साथ पिकनिक मना रहे... उन्हें ट्यूशन पढ़ा रहे.... या उन्हें क्रिकेट फुटबॉल खिला रहे....

सच में यह खयाल ही रोमांचित करने वाला है... और यकीन मानिये हम इन सुन्दर लम्हों को आप सभी के साथ Share करेंगे, ''तारांशु'' में इनके फोटो देकर, क्योंकि आप सब साथ न होने तो हम कुछ भी नहीं कर सकते थे।

कल्पना गोयल

एक दानदाता के भाव....

जब भी कोइ अच्छा काम होता है तो इसमें बहुत से अच्छे लोगों का साथ मिलता है तभी हो पाता है... तारा में भी जो कुछ हम कर पा रहे है, हजारों लोगों की मदद की वजह से है, जो न हमें जानतें है न उनको जिनकी वो मदद कर रहे। बस एक भाव है कि किसी के लिए कुछ करना है। यह भाव इतना बडा होता है कि लोग अपनी छोटी सी आय में से भी कुछ अंश अच्छे काम के लिए दे देते है। ऐसा ही एक पत्र मेरे सामने आया जिसे आप सभी के सामने रख रहा.....

मूल पत्र

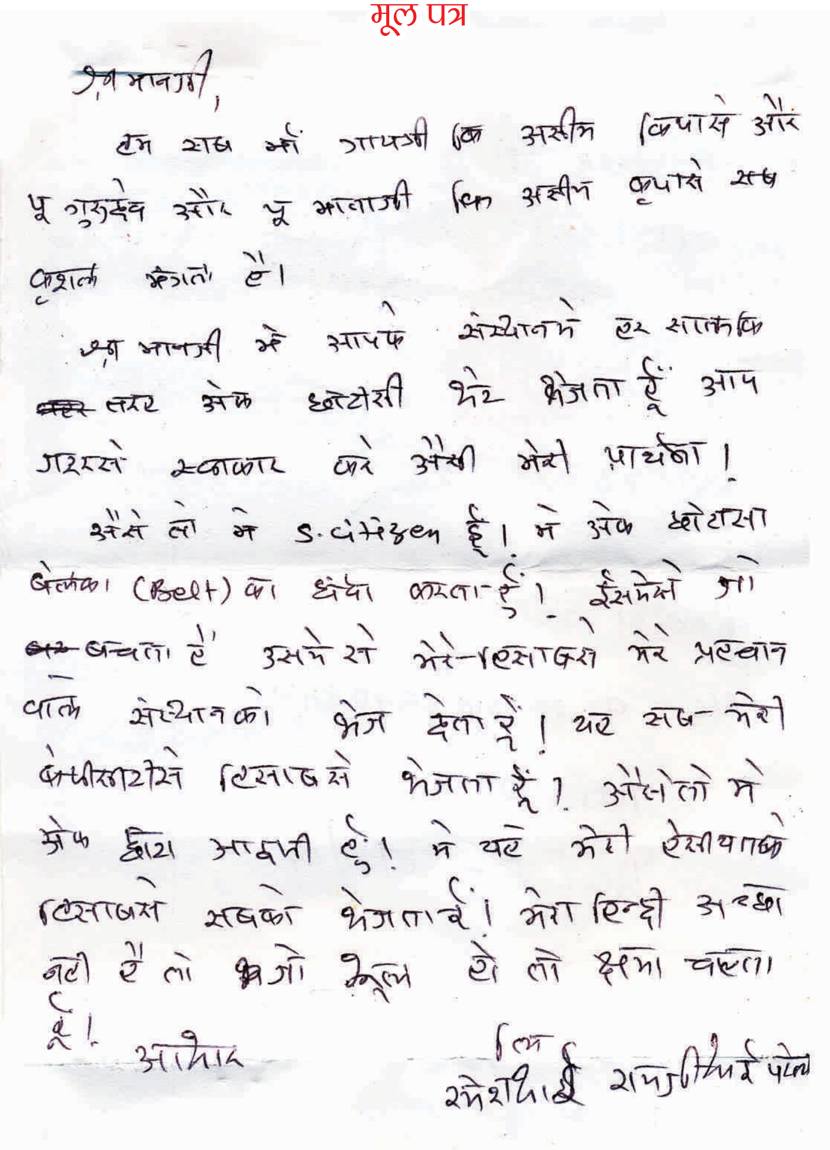

श्रीमानजी,

हम सब माँ गायत्री कि असीम किपासे और पू गुरुदेव और पू माताजी कि असीम कृपासे सब कुशल मंगल है।

श्रीमानजी मे आपके संस्थानमे हर सालकि तरह ओक छोटीसी भेट भेजता हूँ आप उसको स्वीकार करे ओसी मेरी प्रार्थना।

ओसे तो मे S.citizen हूँ। मे ओक छोटासा बेल्टका (Belt) का धंधा करता हूँ। ईसमेसे जो बचता है उसमेसे मेरे हिसाबसे मेरे पहचान वाले संस्थानको भेज देता हूँ। यह सब मेरे हिसाबसे भेजता हूँ। ओसेतो मे ओक छोटा आदमी हूँ। मे यह मेरी हेसीयतके हिसाबसे सबको भेजता हूँ। मेरा हिन्दी अच्छा नही है तो कोई भूल हो तो क्षमा चाहता हूँ।

आभार

लि. रमेशभाई रामजीभाई पटेल

पत्र की टाइप की भाषा

श्रीमान् जी,

हम सब माँ गायत्री की असीम कृपा से और पूज्य गुरुदेव और पूज्या माता की असीम कृपा से सब कुशल मंगल है।

श्रीमान् जी में आपके संस्थान में हर साल की तरह एक छोटी सी भेंट भेज रहा हूँ आप स्वीकार करें ऐसी मेरी प्रार्थना है। ऐसे तो मैं सीनीयर सिटीजन हूँ मैं एक छोटा सा बेल्ट का (Belt) का धन्धा करता हूँ। इसमें जो बचता है उससे मेरे हिसाब से मेरे पहचान वाले संस्थान को भेज देता हूँ। यह सब मेरे हिसाब से भेजता हूँ। ऐसे तो मैं एक छोटा आदमी हूँ, मैं यह मेरी हैसियत के हिसाब से सबको भेजता हूँ। मेरी हिन्दी अच्छी नहीं है, भूल हो तो क्षमा चाहता हूँ।

आभार

रमेष भाई रामजी भाई पटेल

''तारा जो कुछ भी कर पा रही है वो निश्चित ही आप सभी के सहयोग के कारण ही है हमारे दानदाता ने अपनी क्षमताओं से परे जाकर हमें सहयोग किया है और ''तारा'' के कार्यों का निरंतर चलते जाना इसका सबसे बडा साक्ष्य है। यह पत्र तो सिर्फ उन भावनाओं का द्योतक है कि आप सभी लोग अपनी मेहनत की कमाई कैसे हम पर विश्वास करके भेज देते है और हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी बन जाती है कि इस राशि का सही और सार्थक उपयोग हो क्युंकि इसमें बहुत सी भावनाऐ शामिल है....

हमारा प्रयास रहेगा कि हम हमेशा आप के विश्वास पर खरे उतरे

आदर सहित

दीपेश मित्तल

गौरी योजना

41 वर्षीया, कामिनी तिवारी, वृंदावन (मथुरा) की रहने वाली हैं। इनके एक 12 वर्षीय पुत्र और एक 18 वर्षीया पुत्री है। इनके पति श्री गोविन्द प्रसाद तिवारी का जनवरी, 2009 में निधन हो गया। पति प्राइवेट वाहन चालक थे। अपने साधारण वेतन के बल बूते श्री तिवारी अपना घर सामान्य रूप से चला रहे थे। परन्तु, अकस्मात् निधन के कारण परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। आय का साधन नहीं रहने से श्रीमती कामिनी तिवारी के लिए अपने बच्चों के भरण – पोषण का संकट उपस्थित हो गया। ऐसी असहाय स्थिति में रिश्तेदार कभी–कभार थोड़ी सहायता करते रहे, पर यह सहायता अनिश्चित और अपर्याप्त थी। कामिनी तिवारी की परिस्थितियों की जब तारा संस्थान की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल को जानकारी मिली, तो तत्काल श्रीमती कामिनी तिवारी का गौरी योजना के अन्तर्गत चयन कर इन्हें प्रतिमाह 1000 रु. नकद सहायता देना प्रारम्भ कर दिया गया। इससे कामिनी तिवारी को कुछ राहत मिली है।

32 वर्षीया हेमलता, पाली (राजस्थान) की रहने वाली हैं। इनके मजदूरी पेशा पति श्री उत्तम सिंह का नवम्बर 2011 में निधन हो गया। पति के निधन के बाद ससुराल वालों ने हेमलता को 2 अल्पायु पुत्रियों के साथ घर से बाहर निकाल दिया। अब बच्चियों का भरण – पोषण और जिम्मेदारी हेमलता पर आ गई, और हेमलता के पास आय का कोई भी साधन नहीं। पास – पड़ोस के कुछ दयालु महानुभाव इनकी कुछ सहायता कर देते हैं, पर वे भी आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हैं। अतः हेमलता की परेशानियाँ बढ़ती ही गईं। उनके पड़ोस के एक बुजुर्ग सज्जन व्यक्ति ने तारा संस्थान का टी.वी. प्रसारण देखा और उन्होंने हेमलता को तारा संस्थान व गौरी योजना की जानकारी दी। तत्पश्चात् हेमलता ने तारा संस्थान को अपनी परिस्थितियों से अवगत करवाते हुए सहायता हेतु निवेदन किया। इन्हें राहत देते की दृष्टि से तारा संस्थान द्वारा इनका चयन गौरी योजना में करके हेमलता को आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, जो प्रतिमाह इनके बैंक खाते में जमा करवाई जाती है। यद्यपि, यह अल्प सहायता कदापि पर्याप्त नहीं है, तथापि, दानदाताओं के सौजन्य से हेमलता को कुछ राहत तो मिली ही है।

मानवीय संवेदनाओं को आहत करने वाली असहाय विधवा महिलाओं की पीड़ाओं को कुछ कम करने के प्रयास के प्रति यदि आप भी इच्छुक हों, तो कृपया प्रति विधवा महिला 1000 रु. प्रतिमाह की दर से 01 माह, 03 माह, 06 माह, 01 वर्ष या इससे भी अधिक अवधि के लिए अपना दान–सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने का अनुग्रह करें।

तृप्ति योजना

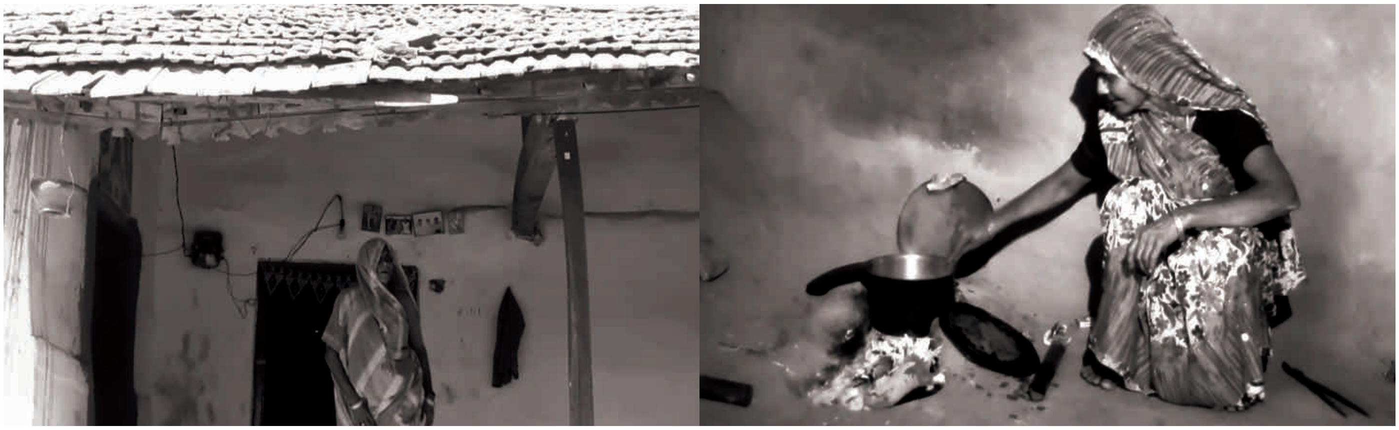

श्रीमती सोहन बाई, आयु – 45 वर्ष लेई का गुड़ा (बड़ी), जिला – उदयपुर की निवासी हैं। श्रीमती सोहन बाई के परिवार में ये स्वयं तथा पति श्री पहाड़सिंह हैं। श्री पहाड़सिंह मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से अपना गुजारा चला पा रहे हैं। इनके न तो कोई सन्तान है और न ही आजीविका का कोई सहारा। आर्थिक स्थिति दयनीय है। दो समय भरपेट भोजन का प्रबन्ध भी बड़ी कठिनाई से हो पाता है और बहुत बार एक समय भोजन या भूखे पेट ही सोना पड़ता है। रहने के लिए नाम मात्र का घर है। पति की आयु 55 वर्ष है और कमजोरी के कारण ठीक परिश्रम भी नहीं कर पाते। इनकी इस हालत की जानकारी जब तारा संस्थान को मिली, तो इन्हें तृप्ति योजना के अन्तर्गत खाद्य सामग्री सहायता प्रारम्भ की गई। इस सहायता से सोहन बाई को इतनी राहत तो मिली ही है, कि अब उन्हें भूखे पेट सोना नहीं पड़ता।

श्रीमती निरंजना आमेटा, आयु 55 वर्ष, कांकरोली (राजसमन्द) की रहने वाली हैं। इनके पति श्री बाबुलाल आमेटा मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। एक पुत्री है, जिसका विवाह हो चुका है। घर में कमाने वाला कोई नहीं है। पति अस्वस्थ होने के कारण कोई काम नहीं करते हैं। ऐसी स्थिति में जीवन–बसर बहुत मुश्किल हो रहा है। श्रीमती निरंजना आमेटा बड़ी कठिनाई से स्वयम् और पति का गुजारा करने के लिए कष्टों से भरा जीवन जी रही हैं। इनकी पीड़ाओं की जब तारा संस्थान को जानकारी मिली तो तारा की अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल ने इन्हें मानवीय आधार पर तृप्ति योजना में सम्मिलित करके इन्हें खाद्य सहायता देना प्रारंभ किया है। इस आंशिक सहायता–सामग्री से श्रीमती निरंजना आमेटा को कुछ राहत मिली है।

‘तृप्ति योजना’ के अन्तर्गत प्रत्येक बुजुर्ग को 1500/– मूल्य की खाद्य–सामग्री सहायता प्रतिमाह वितरित की जा रही है।

वर्तमान में तृप्ति योजना के अन्तर्गत 252 बुजुर्ग बन्धुओं को प्रतिमाह उपर्युक्त मात्रानुसार खाद्य सामग्री पहुँचाई जा रही है।
आपके सहयोग सौजन्य से यह संख्या 500 करने का लक्ष्य है।

आपसे प्रार्थित खाद्य–सामग्री सहयोग–सौजन्य राशि
रु. 4500 (3 माह), रु. 9000 (6 माह), रु. 18000 (एक वर्ष)

जिस दिन आपने अपनी
जिन्दगी को खुलकर जी लिया,
वही दिन आपका है,
बाकी.....
तो सिर्फ कैलेण्डर की तारीख है

नये आवासी

65 वर्षीय बुजुर्ग श्री प्रेम सिंह गौड़, गाँव – बोलासा, तहसील – सोनकच्छ, जिला – देवास (म.प्र.) के निवासी हैं। इनके 2 पुत्र व 1 पुत्री है। तीनों का विवाह हो चुका है। खेतीबाड़ी का कार्य करने वाले श्री प्रेमसिंह ने अपनी खेती का बँटवारा दोनों पुत्रों में कर दिया। दोनों बेटे अलग – अलग खेतीबाड़ी का काम देखते हैं। ये बताते हैं कि जब उन्होंने खाने के लिए रोटी माँगी, तो बेटों ने, बहु ने और पत्नी ने इनके साथ मारपीट की। इन्होंने मारपीट की रिपोर्ट पुलिस थाने में भी लिखवाई। आँखों में मोतियाबिन्द होने के कारण इन्हें कम दिखाई देता था। इनके परिचित चित्तौड़गढ़ निवासी श्री रमेश विश्वकर्मा ने इन्हें वृद्धाश्रम की जानकारी दी। परिजनों के व्यवहार से दुःखी होकर श्री प्रेम सिंह तारा संस्थान के वृद्धाश्रम में अप्रैल माह में आए। यहाँ आने पर इनकी आँखों की जाँच करवाई गई और एक आँख का ऑपरेशन भी हो गया। इन्हें अब ठीक दिखाई दे रहा है तथा दूसरी आँख के ऑपरेशन की भी तैयारी है। आनन्द वृद्धाश्रम में आश्रय पाकर श्री प्रेमसिंह गौड़ प्रसन्न हैं और अब यहाँ सुख–पूर्वक जीवन यापन कर रहे हैं।

15 जून, 2014 को 'भारत विकास परिषद्' – विवेकानन्द के कार्यकर्त्ताओं ने आनन्द वृद्धाश्रम के आवासियों के साथ 'फादर्स डे' मनाया।

आप भी यदि किसी असहाय बुजुर्ग बन्धु के लिए 'आनन्द वृद्धाश्रम' में आवास की मानवीय सुविधा उपलब्ध करवाने की सेवा भावना रखते हैं, तो कृपया प्रति बुजुर्ग 5000 रु. प्रतिमाह की दर से अपना दान सहयोग 'तारा संस्थान' को प्रेषित करने की कृपा करें।

01 माह – 5000 रु., 03 माह – 15000 रु., 06 माह – 30000 रु., 01 वर्ष – 60000 रु.

वृद्धाश्रम आवासियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। उनके लिए वृद्धाश्रम की सभी सेवाएँ सुविधाएँ – भोजन, वस्त्र, आवास, चिकित्सा देखभाल आदि, सर्वथा निःशुल्क हैं।

मोतियाबिन्द जाँच -ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली व मुम्बई स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से – 18 मई, 2014 से 16 जून, 2014 के मध्य आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

तारा नेत्रालय, उदयपुर में आयोजित शिविर

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
03.06.2014	श्री सुषील कुमार जी भट्ट, निवासी – चैन्नई	95	17
26.06.2014	श्रीमती निषा – श्री रोहित गुप्ता निवासी – दिल्ली	121	11

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
10.06.2014	श्री प्रदीप जी जैन, निवासी – चैन्नई	109	04

तारा नेत्रालय, दिल्ली में आयोजित शिविर

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
21.05.2014	समर बेबी प्रोडक्ट (श्री सुरेन्द्र कुमार जी), दिल्ली 53	101	03
09.06.2014	श्रीमती निर्मला जी कपूर, दिल्ली 24 श्री प्यारे लाल जी वेदप्रकाष जी, बल्लभगढ़ (हरि.)	101	03

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
11.06.2014	श्री जगदीष लाल जी शर्मा, निवासी – दिल्ली	91	05
26.06.2014	MISS SWARAN & MR. VIJAY JAIRATH Gautam Nagar, Delhi	110	11

तारा नेत्रालय, मुम्बई में आयोजित शिविर

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
01.06.2014	श्री कुंजबिहारी जी बंसल, निवासी – मुम्बई	165	14

दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	कुल ओ.पी.डी.	चयनित
04.06.2014	सहयोगी – बोरीवली विकास फाउण्डेषन	117	16

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर – 151000 रु.

चश्मा जाँच – चश्मा वितरण – दवाई सहयोग राशि, प्रति शिविर – 21000 रु.

दानदाताओं के सौजन्य से आयोजित शिविरों के विवरण व फोटोग्राफ्स

अतिथियों का सम्मान

श्रीमती पुष्पेन्दर जी कौर

दिनांक : 18.05.2014, स्थान : सेक्टर – 9, द्वारका, नई दिल्ली 77

ओपीडी : 203, चयनित रोगी : 09, चष्मे : 98, दवाई : 191

षिविर में रोगी बन्धु

श्रीमती दर्षनीदेवी जैन (देवकीमाता) धर्मपत्नी स्व. लाला वीरसैन जैन, दिल्ली

दिनांक : 19.05.2014, स्थान : चावड़ी बाजार, दिल्ली 06

ओपीडी : 311, चयनित रोगी : 20, चष्मे : 200, दवाई : 308

चिकित्सक महोदय द्वारा नेत्र रोगी की जाँच

पथिक चेरिटेबल ट्रस्ट

दिनांक : 25.05.2014, स्थान : वैषाली, गाजियाबाद (यू.पी.),

ओपीडी : 120, चयनित रोगी : 04, चष्मे : 71, दवाई : 102

अतिथियों का सम्मान

श्रीमती माया गुप्ता धर्मपत्नी श्री एम.पी. गुप्ता एवं आदिती दास

दिनांक : 25.05.2014, स्थान : शंकर विहार, विकास मार्ग, दिल्ली,

ओपीडी : 235, चयनित रोगी : 10, चष्मे : 176, दवाई : 225

अतिथियों का सम्मान

पेक्सल टेक्नोलोजी (प्रा.लि.), दिल्ली

दिनांक : 25.05.2014, स्थान : विकास नगर, दिल्ली 18,

ओपीडी : 531, चयनित रोगी : 24, चष्मे : 350, दवाई : 516

चिकित्सक महोदय नेत्र जाँच करते हुए

श्रीमती मनोरमा जी धवल

दिनांक : 26.05.2014, स्थान : भोगल रोड़, जगपुरा, नई दिल्ली 14

ओपीडी : 407, चयनित रोगी : 17, चष्मे : 170, दवाई : 355

दानदाताओं के सौजन्य से आयोजित शिविरों के विवरण व फोटोग्राफ्स

नेत्र रोगी बन्धु को चष्मा पहनाते हुए

शासनपति महावीर स्वामी

दिनांक : 26.05.2014, स्थान : कृष्णा नगर, दिल्ली 51,

ओपीडी : 510, चयनित रोगी : 18, चष्मे : 225, दवाई : 385

नेत्र रोगी की जाँच

श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी श्री सत्यभूषण जैन, माताश्री – श्री पीयुष, पंकज जैन, दिल्ली

दिनांक : 27.05.2014, स्थान : पटपड़गंज, दिल्ली 92,

ओपीडी : 450, चयनित रोगी : 17, चष्मे : 235, दवाई : 403

चिकित्सक महोदय नेत्र रोगी बन्धु को परामर्ष देते हुए

अरोड़ा परिवार, मुम्बई

दिनांक : 28.05.2014, स्थान : नेरुल, मुम्बई,

ओपीडी : 116, चयनित रोगी : 10, चष्मे : 75, दवाई : 35

जाँच के लिए पंजीकरण

स्व. बसंती देवी एवं स्व. श्री सरनी राम शर्मा, निवासी – नोएडा

दिनांक : 01.06.2014, स्थान : सेक्टर – 12, नोएडा

ओपीडी : 520, चयनित रोगी : 30, चष्मे : 380, दवाई : 495

अतिथियों का सम्मान

श्री एस.एस. जैन महिला मण्डल (रजि.), ऋषभ विहार, दिल्ली 92

दिनांक : 02.06.2014, स्थान : गाँधीनगर, दिल्ली 31

ओपीडी : 806, चयनित रोगी : 26, चष्मे : 515, दवाई : 735

मोतियाबिन्द जाँच – परीक्षण

श्री एन.के. गुप्ता, भारत इंजीनियरिंग इन्टर., दिलषाद गार्डन, दिल्ली 95

दिनांक : 05.06.2014, स्थान : रोहिणी, दिल्ली

ओपीडी : 151, चयनित रोगी : 07, चष्मे : 105, दवाई : 145

दानदाताओं के सौजन्य से आयोजित शिविरों के विवरण व फोटोग्राफ्स

नेत्र रोगी की जाँच करते चिकित्सक

श्रीमती पुष्पादेवी राठी – श्री वासुदेव राठी, निवासी – चैन्नई

दिनांक : 08.06.2014, स्थान : नागलिया, वल्लभनगर, उदयपुर

ओपीडी : 130, चयनित रोगी : 15, चष्मे : 30, दवाई : 63

पंजीकरण करवाते हुए नेत्र रोगी

आनन्द प्लाईवुड सेन्टर, सूरत (गुजरात)

दिनांक : 15.06.2014, स्थान : मोरझाई, वल्लभनगर, उदयपुर

ओपीडी : 130, चयनित रोगी : 04, चष्मे : 27, दवाई : 83

अतिथियों का सम्मान

श्रीमती विमला जी जैन, निवासी – दिल्ली

दिनांक : 16.06.2014, स्थान : शाहदरा, दिल्ली 93

ओपीडी : 225, चयनित रोगी : 06, चष्मे : 98, दवाई : 202

नेत्र रोगी की जाँच

श्रीमती दर्षनीदेवी जैन (देवकीमाता) धर्मपत्नी स्व. लाला वीरसैन जैन, दिल्ली

दिनांक : 16.06.2014, स्थान : चावड़ी बाजार, दिल्ली 06

ओपीडी : 334, चयनित रोगी : 15, चष्मे : 261, दवाई : 308

स्व. श्री पोण्टी चड्डा

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा की प्रेरणा से "The Ponty Chaddha Foundation" के सौजन्य से आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
06 जून, 2014	श्री गुरुनानक सत्संग सभा (रजि.), 18, पोद्दार सर्कल, मलाड	165	19	53	89
22 जून, 2014	श्री गुरुद्वारा सच्चा सौदा साहिब जी, मालवणी नं. 1, मलाड (वे.)	256	07	43	82

इन शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं। मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान उदयपुर , दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

तारा संस्थान में पधारे अतिथि महानुभावों का स्वागत सम्मान

श्रीमती ज्योति जोशी (दहीसर) परिवार के साथ

श्री नागपाल जज्जर, चण्डीगढ़

श्री धनराम (चूरू), श्री शिवरत्न (कोलकाता) एवं श्री देव किशन (कोलकाता)

श्री प्रेम सुख लोहिया, खण्डवा

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.

चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

श्री अजय, दिल्ली एवं श्री शशिकान्त, देवास (एम.पी.)

श्री कैलाश चन्द राजमल जी जैन, सूरत (गुजरात)

सम्मानित होने वाले अतिथि महानुभाव संस्थान की
संस्थापक एवम् अध्यक्ष श्रीमती कल्पना गोयल एवं मुख्य कार्यकारी श्री दीपेश मित्तल के साथ

जिंदगी में खूब कमाये क्या हीरे क्या मोती?
पर क्या करे यारों कफन के जेबें नहीं होती।

झरने अपना पानी खुद नहीं पीते,
पेड़ अपने फल खुद नहीं खाते,
और ना ही बादल वो फसल खाते हैं जो
उन्हीं के द्वारा बरसे पानी से बनती है,
यह सारी 'सपंदा' औरों के ही काम आती है।

और यहीं से हम सीखते हैं, 'देने की कला...'
इस पर किसी ने यह भी कहा,
'ये दुनिया अगर मिल भी जाये तो क्या है?'
या फिर कुछ ऐसे।

'बिना लिबास के आये थे हमसब इस जहाँ में,
बस एक कफन की खातिर इतना सफर करना पड़ा'।

ये जिन्दगी का फलसफा कह सकते हैं। ऐसा अगर है तो हम कब ये तय कर पायेंगे।

हमारी जरूरतें कितनी है?
हमें कहाँ तक जाना है?
हमारी आवश्यकता कितने में पूरी होगी?

मेरे एक गुरु है, वे कहते हैं,

'दो रोटी सुबह, दो रोटी शाम' यही सही मायनों में सभी की जरूरत है, फर्क है तो सिर्फ थाली का, सोने की, चाँदी की या काँच की। ज्यादातर लोग 'चाँदी' में अटके पड़े हैं। अगर एक मिल जाये तो 'एक दर्जन' की तमन्ना जगती है, अगर सोने की है तो मनषा उसमें हीरे जड़वाने की होती है। ऐसी 'तृष्णा' वाले भला कब भोजन का आनन्द ले पाते है?उनका ध्यान तो घर का काम करने वाले मजदूर पर है कि वो कहीं चाँदी की चम्मच या कटोरी चुराकर ना ले जायें। उनसे तो हम भले जो पत्तलों में खाते हैं, ना संभालने का डर ना चोरी का।

प्रश्न : "किंतु गुरुजी लोग स्टेटस के लिये भी यह सब कुछ करते रहते हैं, उसका क्या उपाय है?"

इस पर श्री श्री रविशंकर कहते हैं,
'स्टेट्स क्या?
हम वो पैसा खर्च करते हैं जो हमारा नहीं है,
उनसे वो चीजें खरीदते हैं जिनकी हमें आवश्यकता नहीं है,
और वे उन्हें दिखाने की कोशिश करते हैं जिन्हें हम जानते नहीं है,'
वह होता है स्टेट्स

तो अब प्रश्न रह जाता है,
के हम कुछ करें ही ना?
जो है उसी में संतुष्टि मान लें?
अपने आपको सीमित कर लें?
हम भी साधु संत बन जायें?
तो उत्तर है, बिल्कुल नहीं, कतई नहीं, कदापि नहीं। आपकी मेहनत, शोहरत, नाम, शिक्षा, रिश्तों से फला, फुला, फैलता कारोबार करते रहिये, बढ़ाते रहिये, किंतु यह करते करते अच्छे व्यापारियों की तरह जैसे आप 'बैलेन्स शीट' जाँचते हैं, अपने आपको जाँचते रहिये, 'CHECK YOURSELF' 'INTROSPECT YOURSELF' आप हम सभी को याद होगा, कइयों ने तो देखा भी है, हमारे पुरखों ने, हमारे गाँव में कुवे खुदवाये, धर्मशालायें बनवायी, स्कूल, अस्पताल आदि बनवाने में मदद की, अब भी जरूरतें वही है स्वरूप बदल गया है, अब हमें अपने शहर में होस्टल की, अपंग–मतिमंद बच्चों के 'शिक्षा' का खर्च उठाने की, छोटे–छोटे गाँवों में सोलर चुल्हे, सोलर दीये (क्योंकि बिजली अभी तक पहुँची नहीं है), शौचालय, पीने के पानी के लिये 'बोअरवेल' आदि – आदि की आवश्यकता है। जो परंपरा हमारी 'दया' की व 'देने' की रही है उसे चलाना है, और निभाना भी है।

संत तुलसीदास जी का एक दोहा है,

तुलसी पंछीन के पिये, घटे ना सरिता नीर,
दान किये धन ना घटे, जो सहाय रघुबिर

भावार्थ : पंछियों के पीने से नदी का पानी कम नहीं होता, उसी तरह दान करने से आपके धन में कमी नहीं होगी क्योंकि दानदाताओं की सहायता के लिये प्रभु सदा ही साथ रहते हैं।

लॅडन के पास एक छोटे गाँव में एक धनवान रहता था, जिसके पास अरबों–खरबों की दौलत थी। एक दिन वह चर्च के फादर के पास गया व बोला

"फादर क्या कारण है, कि गाँव वाले मुझसे नफरत करतें है, मुझसे बात नहीं करते जबकि आप जानते हो मेरे मरने के बाद मैं अपनी सारी की सारी संपत्ति चर्च को दान कर जाऊँगा, जो इन गाँव वालों के ही काम आयेगी।"

फादर ने कहा एक कहानी सुनाता हूँ सुन, एक गाँव में एक गाय और एक सुअर दोनों मित्र थे एक दिन वह सुअर, गाय से बोला

"क्या कारण है कि गाँव वाले मुझसे नफरत करते हैं, और तुझे प्यार करते हैं, जबकि मेरे भी चार पाँव, तुझे भी चार पाँव, मेरा भी मुँह लंबा और तेरा भी, मेरे भी एक पूँछ और तेरी भी, सभी कुछ तो समान है। फर्क सिर्फ इतना है तुम उन्हें दुध देती हो, तो मैं भी तो मरने के बाद सब कुछ इन गाँव वालों को दे जाऊँगा, मेरे बालों के ब्रश बनेंगे, मेरे चमड़े के जूते, मैं पूरा का पूरा गाँव वालों के ही काम आऊँगा, बस इतना ही तो फर्क है।"

इस पर गाय ने जो जवाब दिया, वही जवाब तुम्हारे–हमारे लिये भी लागू होता है, गाय बोली, "फर्क सिर्फ इतना सा नहीं, बहुत बड़ा फर्क है, मैं जीते जी दे रही हूँ, तू मरने के बाद देगा।"

भावार्थ : जो कुछ देना है, अपने जीते जी दे दीजिये, आपके मरने के बाद तो चाहे कुछ भी हो, उससे आप को क्या?
कहते है,

"वे आदमी है, तो दुआ किजे,
वे आदमी रहे, दुआ किजे,
सिर्फ होने से कुछ नहीं होता,
अपने होने का हक अदा किजे"

माचिस की तिली का सार्थक क्या, जलने के बाद बुझने से पहले कोई दिया जला दे, तभी तो माचिस हुई वरना लकड़ी का मात्र टुकड़ा। इसे मनुष्य जन्म से जोड़ दे तो जन्म हम ले चुके हैं, वरना कब है पता नहीं, तो क्यों न किसी अंधियारी आँखों में रोशनी भर दी जाये। अपने होने का हक अदा किया जाय?

संत तुलसी दास जी का एक और दोहा, बड़ा सटीक है,

पानी बढ़यों ना में घर में बढ़यों दाम,
दोनों हाथ उलिचीयें, यही सयानो काम।

भावार्थ : नाव में पानी बढ़ गया हो, या घर में धन, दोनों हाथों से उसे बाहर निकालिये तभी आप बच पायेंगे।
शायद वहीं पिछले प्रसंग वाला प्रश्न आप पूछे,
मैं अकेला क्या कर सकता हूँ? कितना कर पाऊँगा? उत्तर है, शुरुआत तो करिये, कुछ ऐसे,'

काँटें आते हैं, आने दो, तुम तो एक फूल खिलाओ,
अंधकार को कोसो मत, दीपक एक जलाओ,
एक एक यदि फूल खिला तो फिर वसंत लहराये,
एक एक यही दीप जला तो अंधकार मिट जाये

कुछ प्रश्न और मन में उठना लाजमी है, मनुष्य स्वभाव है,
प्रश्न : 'दान' कब दे?
उत्तर : जिस वक्त आपका मन करे तभी, उसी वक्त।

'महाभारत' युद्ध के पश्चात् एक दिन एक भिखरी (याचक) धर्मराज युधिष्ठिर से दान की याचना करने लगा। धर्मराज ने कहा "कल आना" इस पर छोटा भाई भीम तुरंत बोल पड़ा।

"वा भैय्या आपने तो काल पर विजय पा ली, आपको तो जैसे पता ही है, के आप कल जीवित रहने वाले हो।"
धर्मराज के बात समझ में आ गयी, उसने तुरंत जी याचक को बुलाकर दान दे दिया। तभी, उसी वक्त।

एक कहानी जो मेरे मन मस्तिष्क पर अंकित है

जपान में यह आकाशवाणी हुई कि 'अगले पाँच वर्ष अब बरसात नहीं होगी।' सभी किसान अपने-अपने हल आदि समेटकर अपने घरों में रखकर मजदूरी करने शहर की ओर चले गये। किंतु एक किसान अपने खेतों में हल जोत रहा था। जब बादल वहाँ से गुजर रहे थे तो उन्होंने हल जोत रहे किसान को देखी तो रुक गये और उस किसान से पूछा –

"जब हम पाँच वर्षों तक बरसने वाले ही नहीं है तो तुम ये हल क्यों जोत रहे हो?

इस पर किसान बोला "अगर मैंने पाँच वर्षों तक हल नहीं जोता, और पाँच वर्षों बाद मैं हल जोतना भूल गया तो?इसलिये....

बादलों ने मन ही मन सोचा, "वाकई इस किसान की तरह अगर मैं भी पाँच वर्षों के बाद बरसना ही भूल गया तो?"

और बादलों ने बरसना शुरू कर दिया।

मैं कल दूंगा, परसो दूंगा, शायद इसी सोच में हम उलझे रहे और देना ही भूल गये तो?

प्रश्न : क्या देना चाहिये ?
उत्तरः कुछ भी। जरूरी नहीं वह धन, पैसा, संपत्ति ही हो, अगर मन प्रसन्न होता है तो फूल भी काफी है या एक मुस्कान भी। आप क्या दे रहें? कितना दे रहे हैं? उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है आप किस भावना से दे रहे हैं। आप जो भी दें दिल से दें।

प्रश्न : किसे दें ?
उत्तरः आप जज बनकर औरों को आरोपी के कटघरे में खड़ा ना करें। पूर्व दुषित ग्रहमान हरदम दीवार बन जाते हैं। किसी जरूरतमंद को पहचाने उसकी में जरुरत को समझें, जज बनकर नहीं।

प्रश्न : कैसे दें ?
उत्तरः कहते हैं आप जब बायें हाथ से दें तो दाये को भी पता न चले, ऐसे दें। दान बिना प्रसिद्धी के होता है सर्वश्रेष्ठ दान। और एक बात, महत्त्वपूर्ण, किसी की मदद करते वक्त उसके चेहरे की तरफ मत देखो, क्योंकि कहीं उसकी शर्मिंदा आँखे तुम्हारे दिल में गरूर का बीज ना बो दें। लेने वाला अपने आपको छोटा या कम महसूस ना करे, ऐसे दीजिये। आखिरकार जो हम दे रहे हैं, हमें भी तो किसी ने दिया है, निःसन्देह ऊपरवाला परमपिता परमात्मा। इसलिए कृतज्ञता पूर्वक दीजिये।

उपरोक्त कही बातों में एक चायनीज किवदंती मुझे याद आती है।, चायना में यह मान्यता है कि जिसके पास 100 करोड़ है, वह मरने के बाद स्वर्ग जाकर अपना नाम सोने क पहाड़ों पर लिख सकता है।

एक व्यापारी थे मि. टिंगचूं सारी उम्र 100 करोड़ जुटाने में ही लगे रहे, ना किसी को दान दिया ना किसी की मदद की। पाई पाई जोडते रहे, और एक दिन मर गये। मर के स्वर्ग में गये देखा तो यहाँ लम्बी कतार थीं, बीच में घुमने लगे, तो द्वारपालों ने टोका, " बीच में कहा घुमते हो। तो टिंगचूं बोला मैं वो 100 करोड़ वाला हूं द्वारपाल बोला होगा ऐसे रोज बहुत आते हैं, चलो कतार में आओ।

टिंगचूं को लाइन में खड़ा होना पड़ा। थोड़े समय बाद जब उसका नम्बर आया तो द्वारपालों ने फिर पूछा हाँ अब बोलो क्या बात है?

टिंगचूं बोला मैं वो 100 करोड़ वाला हूँ वह सोने का पहाड़ कहाँ है जहाँ मुझ जैसे लोग अपना नाम लिखाते हैं।

द्वारपाल ने दिशा निर्देश करते हुए कहा आगे से बायें मुड़ जाना वहीं है। सोने के पहाड़ टिंगचूं दौड़ते हुए वहाँ पहुँचा जहाँ सोने के पहाड़ थे किन्तु तुरंत ही निराश हो गया यह देखकर कि वह पहाड़ तो पूरे ही नामों से पड़े थे और चुंगी मात्र भी जगह खाली नहीं थी। वहाँ पर गुस्से में दौड़ता हुआ द्वारपाल के पास आकर शिकायत करने लगा, चीखने चिल्लाने लगा "वहाँ तो जगह ही नहीं, मैं अपना नाम कहाँ लिखुँ? ये तो गलत है" वगैरहा वगैरहा।

द्वारपाल मुस्कुराते हुए बोला "क्यों खफा होते हो भाई, इसमें परेशानी की क्या बात है?जाओ किसी का भी नाम मिटा दो और अपना लिख दो।"

भावार्थ : मरने के बाद स्वर्ग में नाम लिखने की लालच रखने के बजाय जीते जी यहीं धरती पर किसी की मदद कर दो।

अखण्ड दाम्पत्य जीवन हेतु शुभकामनाएँ

'तारा संस्थान' के मुख्य संरक्षक श्री एन.पी. भाईव एवं श्रीमती पुष्पा भार्गव के गौरवपूर्ण दाम्पत्य जीवन के 57 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 03 जुलाई, 2014 को समारोह आयोजित किया गया। तारा संस्थान परिवार ने भार्गव दम्पत्ती के अखण्ड वैवाहिक जीवन की कामना के साथ हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त कीं। इस अवसर पर भार्गव दम्पत्ती ने तारा संस्थान के षिक्षा – प्रकल्प के संचालन हेतु 5.80 लाख रु. का दान – सहयोग किया। इस उदार भावना के लिए तारा संस्थान की अध्यक्ष एवं संस्थापक श्रीमती कल्पना गोयल एवं मुख्य कार्यकारी श्री दीपेष मित्तल ने भार्गव दम्पत्ती के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

''तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया''

श्री अजय किशोर जैन, रुडकी (यू.के.)

श्री विजय कुमार अग्रवाल, आगरा (यू.पी.)

तृप्ति योजना सेवा

(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता) 01 माह – 1500 रु., 06 माह – 9000 रु., 01 वर्ष – 18000 रु.

Kindly watch telecast of Tara's Programme on T.V. Channels

पारस — 'Paras' 8.20 PM to 8.40 PM

आस्था भजन — 'Ashtha Bhajan' 8.40 AM to 9.00 AM

colors — 'Colors' 7.00 AM to 7.15 AM USA Time

Helpline Pharmacy
(Run By : Charitable Trust)
संस्था द्वारा दवाईयाँ 50% औसत छूट पर उपलब्ध है।
धार्मिक संस्था की इस दुकान पर मरीज़ों की सहायता के लिए ज़ुकाम से कैंसर तक की सभी विश्वसनीय दवाईयाँ औसतन आधे दामों (50%) पर उपलब्ध है। सभी फायदा लें।
18/4, Main Road, Yusuf Sarai Market, New Delhi-110016
Phone : 46072742, 32049150, 32049151, 9268823657
E-mail : headoffice@mauria.com Website : www.helplinepharmacy.org

सेहत, खुशी और सफलता, हर आदमी के जूझने की क्षमता पर निर्भर होती है। बड़ी बात यह नहीं है कि हमारी जिन्दगी में क्या घटित होता है, बल्कि यह कि जो घटित होता है, हम उसका सामना कैसे करते हैं।

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries

---

'Tara' Contact Details - Office

Mumbai Office
Unit No. 1408/7, 1st Floor,
Israni Indl. Estate, Penkarpara,
Nr. Dahisar Check-post,
Thane - 401104 (M.S.) INDIA
Shri Madhusudan Sharma Cell : 09870088688
Shri Bharat Menaria Cell : 08879199188

Delhi Office
WZ-270, Village - Nawada,
Opp. 720, Metro Pillar,
Uttam Nagar,
Delhi - 59
Shri Amit Sharma,
Cell : 09999071302, 09971332943

Surat Office
295, Chandralok Society,
Parwat Gaon,
Surat (Guj.)
Shri Prakash Acharya
Cell : 08866219767 (Guj.)
09829906319 (Raj.)

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा

(प्रतिबुजुर्ग) 01 माह – 5000 रु., 06 माह – 30000 रु., 01 वर्ष – 60000 रु.

'Tara' Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai (M.S.)
Cell : 09869686830

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai - 400 101, Cell : 09029643708

Shri Prahlad Rai Singhaniya
Hyderabad (A.P.)
Cell : 09849019051

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Satyanarayan Agrawal
Kolkata
Cell : 09339101002

Shri Bajrang Ji Bansal
Kharsia (CG)
Cell : 09329817446

Smt. Pooja Jain
Saharanpur (UP)
Cell : 09411080614

Shri Naval Kishor Ji Gupta
Faridabad (HR.)
Cell : 09873722657

Shri Anil Vishvnath Godbole
Ujjain (MP)
Cell : 09424506021

Shri Vishnu Sharan Saxena
Bhopal (M.P.)
Cell : 09425050136, 08821825087

Shri Vikas Chaurasia
Jaipur (Raj.)
Cell : 09983560006, 09414473392

Shri Dinesh Taneja
Barelly (UP)
Cell : 09412287735

Area Specific Tara Sadhak

Shri Kamal Didawania
Area Chandigarh, Haryana
Cell : 08950765483 (HR),
09001864783

Shri Bhanwar Devanda
Area Noida, Ghaziabad
Cell : 09660153806,
09649999540

Shri Rameshwar Jat
Area Gurgaon, Faridabad
Cell : 08882662492,
09602554991

Shri Sanjay Choubisa
Shri Gopal Gadri
Area Delhi
Cell : 09602506303, 09887839481

गौरी योजना सेवा

(प्रति विधवा महिला सहायता) 01 माह – 1000 रु., 06 माह – 6000 रु., 01 वर्ष – 12000 रु.

Donors Kindly NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers, Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. Prem Chand Goyal & Mrs. Darshan Devi
Rohtak (HR.)

Mr. K.S. & Mrs. Monika Raghuvanshi
Indore (M.P.)

Lt. Mr. Krishna Kumar & Mrs. Shanta
Shrivastava, Patna (Bihar)

Mr. Bharat & Mrs. Bindhu Sharma

Mr. O.P. & Mrs. Vimla Hariyana
Jaipur (Raj.)

Mr. Dayaram Kori & Mrs. Sushila
Jamuna Kalari (M.P.)

Mr. Govardhan Badrinarayan
Sikandi

Mr. A.N. Raina & Mrs. Asha Raina

Mr. Kapurchandra & Mrs. Bina Devi Nigatiya
Sakti (C.G.)

Dr. Subodh Kumar & Mrs. Rajlaxmi Gupta
Rudki (U.K.)

Mr. & Mrs. Anusvya Rathod
Raipur

Mr. Ashok Kumar & Mrs. Pushpa Mishra
Kanpur

Mr. Ram Kumar & Mrs. Viddhawati Singhal
Narwana, Jind

Mr. Prakash Chand & Sarla Devi Patni
Shillong, Meghalaya

Mr. R.S. & Mrs. Vimla Rani Mehta

Mr. Shanti Lal G. & Mrs. Tulshi Ben Purohit
Bhayender (Mumbai)

Lt. Mr. Suresh Chand Agrawal

Mr. Shakuntala Devi
Rohtak (HR.)

Mr. Arjun D. Hinduja
Mumbai - 4

Mr. Ajit Prasad Jain
Agra (U.P.)

Shraddhal Sainath Kumawat
Jamner (M.S.)

Mr. Sushil Bhatt
Chennai

Mr. J.P. Jain
Meerut (U.P.)

Mr. Phoolchand Shah
Vadodra (Guj.)

Lt. Mrs. Krishna Dixit
Jhansi (U.P.)

Mr. Sushil Garg
Agra (U.P.)

Mr. Pradeep Sareen
Rajpura

REFRACTION ROOM AND PATIENT WARD DEDICATED

Smt. Indra N. Jajodia of Opera House, Mumbai has made donation for a Refraction Room and a Patents Ward at Tara Netralaya, Mumbai. The Refraction Room and the Ward are dedicated to the sacred memory of her late husband Shri Nand Kumar Jajodia (March 03, 1930 – January 21, 2013). The devotion and honor of Smt. Jajodia for her late husband is doing a great humanitarian service for the benefit of the needy and poor people suffering from Cataract and Eye-ailments, and who are getting totally free treatment at Tara Sansthan's Eye Hospital – Tara Netralaya at Mumbai. Tara Sansthan offers homage to late Shri Nand Kishor Jajodia.

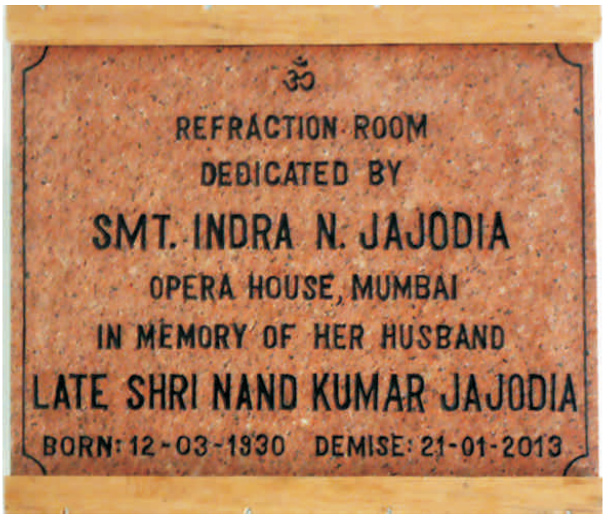

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G and 35 AC / 80GGA of I.T. Act. 1961 at the rate of 50% and 100%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	**IFS Code : icic0000045**
SBI A/c No. 31840870750	**IFS Code : sbin0011406**
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	**IFS Code : IBKL0001166**
Axis Bank A/c No. 912010025408491	**IFS Code : utib0000097**
HDFC A/c No. 12731450000426	**IFS Code : hdfc0001273**
Canara Bank A/c No. 0169101056462	**IFS Code : cnrb0000169**
Central Bank of India A/c No. 3309973967	**IFS Code : cbin0283505**

For online donations - kindly visit - www.tarasansthan.org
Pan Card No. Tara - AABTT8858J

TARA NETRALAYA

WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59

DELHI HOSPITAL - Tara Netralaya
+91 9560626661, 011-25357026

TARA NETRALAYA

Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Meera Road, Thane - 401107 (M.S.) INDIA

MUMBAI HOSPITAL - Tara Netralaya
Shankar Singh Rathore +91 8452835042
022 - 28480001

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक समाचार पत्र, जुलाई, 2014

RNI. No. - RAJBIL/2011/42978, Postal Reg. No. - RJ/UD/29-102/2012-2014, Dates of Posting - 11th to 18th each month at Udaipur H.O.

'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच - III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन - II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

01 ऑपरेशन - 3000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 17 ऑपरेशन - 51000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.

चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा	गौरी योजना सेवा	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा
(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	(प्रति विधवा महिला सहायता)	(प्रतिबुजुर्ग)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन, आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G व 35AC/ 80GGA के अन्तर्गत आयकर में 50% व 100% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFS Code : icic0000045	HDFC A/c No. 12731450000426	IFS Code : hdfc0001273
SBI A/c No. 31840870750	IFS Code : sbin0011406	Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFS Code : cnrb0000169
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFS Code : IBKL0001166	Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFS Code : cbin0283505
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFS Code : utib0000097	Pan Card No. Tara - AABTT8858J	

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

पारस	आस्था भजन	colors
'पारस ' रात्रि 8.20 से 8.40 बजे	'आस्था भजन' प्रातः 8.40 से 9.00 बजे	'कलर्स' प्रातः 7.00 से 7.15 बजे यू.एस.ए समय

बुक पोस्ट

Tara

बुजुर्गों के लिए...

तारा संस्थान

डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993
Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org